वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

रविवार, पौष कृष्ण पक्ष, चतुर्थी, कलियुग वर्ष ५१२२ (३ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

४ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपरजाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-04012021

देव स्तुति

उग्रायोग्रास्वरूपाय यजमानात्मने नमः ।
महाशिवाय सोमाय नमस्त्वमृत मूर्तये ॥

अर्थ : हे उग्ररूपधारी यजमान सदृश आपको नमस्कार है । सोमरूप अमृतमूर्ति हे महादेव ! आपको नमस्कार है ।

शास्त्रवचन

नारायणाचयुतानन्त वासुदेवेति यो नरः ।
सततं कीर्तयेद् भूमिं यान्ति मल्लयतां स हि ॥

अर्थ : जो मनुष्य नारायण, अच्युत, अनन्त और वासुदेव आदि नामोंका संकीर्तन करता है, वह मुझमें लीन होनेवाले भक्तोंकी भूमिको प्राप्त होता है।

****

विचेयानि विचार्याणि विचिन्त्यानि पुनः पुनः ।
कृपणस्य धनानीव त्वन्नामानि भवन्तु नः ॥

अर्थ : हे भगवन ! जैसे कृपण मनुष्य बारम्बार धनका संचय, विचार एवं चिन्तन करता है, उसी प्रकार हमारे लिए आपके नाम ही पुनः-पुनः संग्रहणीय, विचारणीय, चिन्तनीय हों !

धर्मधारा

१. समाजके विनाशकी ओर बढनेके कारण

भ्रष्टाचारग्रस्त, व्याभिचारग्रस्त भारतमें इस प्रकारके कोई न कोई समाचारका प्रकाशित होना इस देशका दुर्भाग्य बन गया है। समाजके आजके सारे तथाकथित आदर्श (रोल मॉडल) बने हुए नायक वस्तुतः खलनायक और खलनायिकाएं हैं, तभी तो समाज विनाश की ओर बढ रहा है !

****

२. नामजपकी परिणामकारकताको कैसे बढाएं ? (भाग-६)

नामजपकी परिणामकारकताको बढाने हेतु आरम्भिक अवस्थाके साधकोंको प्रथम भावजाग्रति एवं उसके पश्चात भाववृद्धि हेतु प्रार्थना करनी चाहिए। भाव वृद्धि होनेसे जैसे-जैसे शरणागति बढती है, वैसे-वैसे नामजपकी गुणवत्ता बढती जाती है एवं नामजप वैखरीसे मध्यमा, तदुपरान्त पश्यन्तीकी ओर बढता है। कलसे हम ऐसी ही कुछ प्रार्थानाओंके विषयमें जानेंगे।

****

३ . किसीको साधना पथसे च्युतकर, उसे पुनः मायामें ले जाना भी पाप है, यह ध्यान रहे !

देहलीके एक व्यक्ति 'उपासना'के सेवाकेन्द्रमें आए थे, वे सेवाकेन्द्रमें सेवारत एक युवा साधकको कहने लगे कि मैं आपकी चाकरी (नौकरी) लगवा देता हूं, आप वह करें ! उन साधकने निर्णय लिया था कि वे कुछ समय पूर्ण समय साधना करेंगे; परन्तु वे आगंतुक उन्हें बार-बार बोल रहे थे कि आप चाकरी करें और साथमें साधना भी कर सकते हैं । वर्तमान समयमें अधिकसे अधिक समय साधनाको देना परम आवश्यक है, आनेवाले भीषण समयमें यदि हमारा आध्यात्मिक स्तर ५०% से अधिक हुआ तो ही हम सुरक्षित रहेंगे, यह बात अनेक बार अनेक सन्तोंने बताई है । देहली जैसे नगरमें चाकरीकर हम कितनी देर सेवाकर सकते हैं ? आप स्वयं सोचें और कोई युवा साधक यदि पूर्ण समय साधना करना चाहता है तो उसे हमें प्रोत्साहित करना चाहिए न कि उसे पुनः मायामें ले जानेका प्रयत्न करना चाहिए । आज इस देशको साधक वृत्तिवाले ऐसे ही एक युवा सेनाकी राष्ट्ररक्षण और धर्मजाग्रातिके कार्यमें योगदान देनेकी परम आवश्यकता है और तभी साधक भी स्वयं और अपने परिवारकी रक्षा आनेवाले समयमें कर सकेंगे, जब उनकी साधना और भावमें अखण्डता होगी । वर्तमान कालको सन्धिकाल कहा गया है, ऐसे समयमें साधनाको प्रधानता देनेसे हमारी आध्यात्मिक प्रगति द्रुत गतिसे होती है । मैंने उस साधकको न ही पूर्ण समय साधना करनेके लिए कहा है और न ही संन्यास लेनेके लिए; परन्तु यदि उसे साधना करनेसे आत्मसन्तुष्टि मिलती है और उसमें भविष्यको लेकर असुरक्षाकी भावना भी नहीं है तो क्या

पूरी सृष्टिका पालन-पोषण करनेवाले परमेश्वर, उस साधकका ध्यान नहीं रखेंगे ? किसीको साधना पथसे च्युतकर उसे पुनः मायामें ले जाना भी पाप है, यह ध्यान रहे !

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

सन्त सेवा

एक गांवमें दामोदर नामका एक निर्धन ब्राह्मण रहा करता था। ब्राह्मणको लोभ और स्वार्थ तनिक भी न था। वह दिनभर गांवमें भिक्षाटन करता और जो भी रूखा-सूखा मिल जाता, उसे भगवानका प्रसाद समझकर ग्रहणकर लेता। समय आनेपर ब्राह्मणका विवाह सम्पन्न हुआ। विवाहके उपरान्त ब्राह्मणने अपनी पत्नीसे कहा, "देखो, अब हम गृहस्थ जीवनमें प्रवेश कर रहें हैं। गृहस्थ जीवनका सबसे प्रथम नियम होता है अतिथि सत्कार करना, गुरु आज्ञाका पालन करना और भजन कीर्तन करना। मैं चाहे घरमें रहूं या न रहूं; परन्तु घरमें यदि कोई अतिथि आए तो उनका बडे अच्छेसे अतिथि सत्कार करना। चाहे हम भूखे रह जाएं; परन्तु हमारे घरसे कोई भी भूखा जाने न पाए।"

ब्राह्मणकी बात सुनकर ब्राह्मणीने मुस्कुराकर कहा, “अच्छी बात है। मैं सब बातोंका ध्यान रखूंगी, आप निश्चिन्त रहें और भजन कीर्तनकर प्रभु भक्तिमें ध्यान लगाएं।"

ब्राह्मण और ब्राह्मणी सुखपूर्वक अपना जीवन यापन करने लगे। ब्राह्मण प्रतिदिवस प्रातःअपने घरसे भिक्षाटनके लिए आस-

पासके गांवमें जाता और जो कुछ भी मिलता उसे प्रभु इच्छा मानकर ग्रहण करता।

ब्राह्मणके घरकी स्थिति बहुत ही सामान्य थी। कभी-कभी तो दोनों पति-पत्नीको भूखा ही सोना पडता। तथापि दोनों पति-पत्नी अपना जीवन सन्तोषपूर्वक यापन कर रहे थे। मनमें कोई भी द्वेष और लोभ न था।

भगवान बडे लीलाधर हैं। वे देवलोकमें बैठे-बैठे सब कुछ देखते हैं। उनकी लीला बडी विचित्र है। वे समय-समयपर अपने भक्तोंके दुःख हरने किसी न किसी भेषमें आते रहते हैं। वे सदैव अपने भक्तोंकी परीक्षा लेते हैं।

एक दिवस ब्राह्मणकी भक्ति और त्यागसे प्रसन्न होकर भगवान ब्राह्मणके घर साधुका वेश धारणकर ब्राह्मणकी परीक्षा लेने पहुंचे। भगवान ब्राह्मणके घरके पास बने ओटलेपर बैठे और भिक्षाके लिए पुकारा। ब्राह्मणने जब साधु महाराजका स्वर सुना तो वह पास आया। उसे देख महात्माजी मुस्कुराए और बोले, "पुत्र ! आज इस मार्गपर जाते-जाते मन किया कि आज तुम्हारे घर भोजन करूं !"

ब्राह्मण दामोदरने प्रसन्नतापूर्वक साधु महाराजको नमन किया और बोला, "महाराज ! बडी अच्छी और प्रसन्नताकी बात है कि आज आप हमारे घर भोजन करनेके लिए पधारे हैं। आइए ! भीतर चलिए।"

इतना कहकर ब्राह्मण साधु महाराजको घरके भीतर ले आया और बिछौना बिछाकर विश्रामके लिए निवेदन किया।

देवयोगसे उस दिवस ब्राह्मणको भिक्षामें एक दाना भी नहीं मिला था। उसने रसोईमें जाकर देखा तो रसोईमें अन्नका एक दाना भी न था।

ब्राह्मणने मन ही मन कहा, "अब क्या करें ? आज तो भिक्षामें कुछ भी नहीं मिला। हम तो भूखे रह सकते थे; परन्तु घर आए अतिथिको भूखा कैसे जाने दें ?" घरमें फटे पुराने कपडों और बर्तनके अतिरिक्त कोई भी सामग्री न थी।

ब्राह्मणने अपनी पत्नीसे कहा, "आज हमारे घरसे अतिथि भूखा ही चला जाएगा। हमने आज तक भगवानकी जो भी भक्तिकी है उसका कोई मोल न रह जाएगा।"

ब्राह्मणकी पत्नीने कहा, “आप घबराते क्यों हैं ? कुछ न कुछ जतन तो हो ही जाएगा।”

पत्नीकी बात सुनकर ब्राह्मणने ब्राह्मणीसे पूछा, “तेरे पास कोई आभूषण है ?”

ब्राह्मणी बोली, “आभूषण नहीं है और वस्त्र भी फटे-पुराने हैं।”

पत्नीकी बात सुनकर ब्राह्मण बोला, “तो अतिथि-सत्कार कैसे करेंगे ?”

ब्राह्मणी बोली, “आप जाकर नाईसे कर्तनी (कैंची) ले आइए !”

ब्राह्मण नाईसे कैंची ले आया।

ब्राह्मणीने अपने सिरके केश अन्दर-अन्दरसे काट लिए और बाहरसे बांध लिए।

अपने केश ब्राह्मणको देकर ब्राह्मणी बोली, “आप आपणिमें जाकर ये केश विक्रयकर आओ और इनसे जो कुछ भी राशि मिले, उससे दाल-चावल लेते आना।”

ब्राह्मण आपणि गया और केश विक्रयकर आपणिसे दाल चावल ले आया। दोनों पति-पत्नीने बडे आदरसे साधु महाराजको भोजन कराया।

भोजनकर साधु महाराज बोले, “वत्स ! इस भरी दोपहरमें अब मैं कहां जाऊंगा ? इसलिए आज दिनमें तुम्हारे यहां ही विश्रामकर लेता हूं।

साधु महाराजकी बात सुनकर ब्राह्मणने प्रसन्नतापूर्वक कहा, “बडी अच्छी बात है महाराज, आपकी सेवाका इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता। इतना कहकर ब्राह्मण साधु महाराजके पास बैठकर उनके चरण दबाने लगा।

अब उद्विग्नता महाराजके सन्ध्याके भोजन की थी। ब्राह्मण पुनः महाराजके भोजनकी चिन्ता करने लगा। अपने पतिको चिन्तामें देख ब्राह्मणी बोली, “आप व्यर्थ चिन्ता न करें ! कुछ न कुछ हो जाएगा।"

सन्ध्याको ब्राह्मणीने अपने सिरके बचे हुए केश काटकर ब्राह्मणको दिए और ब्राह्मणसे दाल-चावल क्रय करनेको कहा। ब्राह्मण आपणिसे दाल-चावल ले आया। रात्रि भोजनमें भी दोनों पति-पत्नीने बडी ही प्रसन्नता और आदरके साथ साधु महाराजको भोजन कराया।

भोजन करनेके पश्चात महात्माजी बडे प्रसन्न हुए और बोले, “वत्स ! तुम्हारे प्रेमसे मैं तृप्त हो गया हूं; परन्तु अब इस अन्धकारमें कहां जाऊंगा ? सोच रहा हूं, आज रात्रि यहीं विश्रामकर लूं। साधु महाराजकी बात सुनकर ब्राह्मण बोला, “महाराज ये जो कुछ भी है सब प्रभुका है। आप निश्चिन्त होकर यहां विश्रामकर सकते हैं। ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपकी सेवा करनेका अवसर प्राप्त हो रहा है।"

इतना कहकर दोनों पति-पत्नी साधु महाराजके चरणोंमें बैठ गए। साधु महाराजके सो जानेके पश्चात महात्माके चरणोंमें ही दोनों पति-पत्नी सो गए।

जब दोनों पति-पत्नी सो गए, तब बाबाजी जाग गए और उन्होंने ब्राह्मणको आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे सारे दुःख-दूर हो जाएं, तुम्हारी पत्नीके केश भी लौट आएं और धन-धान्यसे घर भर जाए। इतना कहकर साधु महाराज अन्तर्धान हो गए।

प्रातः जब ब्राह्मण और उसकी पत्नी उठे तो उन्होंने देखा कि उनके वस्त्र ठीक हो गए थे, ब्राह्मणीके बाल भी पुनः आ गए थे; परन्तु साधु महाराज कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे।

उन्होंने सोचा हो न हो वे कोई सिद्ध साधु थे, जो हमें आशीर्वाद स्वरूप ये सब दे गए हैं। ब्राह्मणने जब अपने घरको देखा तो वह रोने लगे कि महाराज, हम आपका अभिज्ञान नहीं कर पाए !

कहीं हमसे महाराजकी सेवामें कोई चूक तो नहीं रह गई ? हम अनभिज्ञ थे, महाराज हमें क्षमा करें !

ब्राह्मणकी विनती सुनकर भगवान प्रकट हुए और बोले, “तुम्हारे प्रेमपूर्वक भोजन करवानेसे मैं बहुत तृप्त हुआ। तुम सुखी रहो, इतना कहकर भगवान अन्तर्धान हो गए।

घरका वैद्य

मूंगफली (भाग-१)

मूंगफली एक प्रमुख तिलहन उपज है। मूंगफली वानस्पतिक 'प्रोटीन'का एक सुलभ स्रोत है। इसमें 'प्रोटीन'की मात्रा मांसकी तुलनामें १.३ गुणा अधिक, अण्डोंसे २.५ गुणा अधिक एवं फलोंसे ८ गुणा अधिक होती है।

मूंगफली वस्तुतः पोषक तत्त्वोंकी अप्रतीम कोष है। प्रकृतिने प्रचुर मात्रामें इसे विभिन्न पोषक तत्त्वोंसे पूर्ण किया है। १०० ग्राम कच्ची मूंगफलीमें १ लीटर दूधके समान 'प्रोटीन' होता है। मूंगफलीमें 'प्रोटीन'की मात्रा २५ प्रतिशतसे भी अधिक होती है, जबकि मांस, मछली और अण्डोंमें उसकी मात्रा १० प्रतिशतसे अधिक नहीं होती। २५० ग्राम मूंगफलीके मक्खनसे, या ३०० ग्राम पनीर, या २ लीटर दूध या १५ अण्डोंके समान ऊर्जाकी प्राप्ति सरलतासे की जा सकती है।

मूंगफली पाचन शक्ति बढानेमें भी प्रभावकारी उत्पादक है। २५० ग्राम भूनी हुई मूंगफलीमें जितनी मात्रामें खनिज और 'विटामिन' पाए जाते हैं, वो सभी २५० ग्राम मांससे भी प्राप्त नहीं हो सकते हैं। मूंगफलीमें तेलकी प्रतिशत मात्रा ४५ से ५५% तक होती है।

मूंगफलीमें प्रचुर मात्रामें पोषक तत्त्व होते हैं। इसमें बडी मात्रामें 'प्रोटीन', 'विटामिन' और खनिज होते हैं। मूंगफलीके जितना 'प्रोटीन' शुष्क फलों जैसे बादाम, अखरोट आदिमें भी नहीं

होता है । यह विटामिन बी६ ('B6'), विटामिन ई ('E'), 'नियासिन', 'मेगनीज', 'कॉपर', 'जिंक', 'सोडियम', 'फोलेट', 'फास्फोरस', 'मैग्नेशियम' तथा 'फाइबर'का बहुत अच्छा स्रोत है।

घटक : १०० ग्राम मूंगफलीमें कितना कुछ : १०० ग्राम मूंगफलीके भीतर ये तत्त्व होते हैं : 'प्रोटीन' २५.३ ग्राम, नमी (आर्द्रता) ३ ग्राम, वसा ४०.१ ग्राम, खनिज २.४ ग्राम, लौहतत्त्व (आयरन) ३.१ ग्राम, 'कार्बोहाइड्रेट' ३६ ग्राम, ऊर्जा ५६५ कैलोरी, 'कैल्शियम' ९० मिलीग्राम, 'फॉस्फोरस' ३५० मिलीग्राम, 'कैरोटीन' ३७ मिलीग्राम, 'थाइमाइन' ०.९ मिलीग्राम, 'फोलिक एसिड' २० मिलीग्राम।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

पुलिसने १६ वर्षीय बालिकासे विवाहके आरोपमें ५४ वर्षके मुसलमान अब्दुल लतीफ सहित ७ को पकडा

मूल रूपसे केरलसे सम्बन्ध रखनेवाले भाग्यनगर (हैदराबाद) निवासी ५४ वर्षीय मुसलमान अब्दुल लतीफने १६ वर्षीय बालिकासे विवाह किया; परन्तु 'टाइम्स नाउ'की सूचनाके अनुसार, पुलिसने सूचना मिलते ही छापा मारकर बालिकाके माता-पिता सहित ७ लोगोंको बन्दी बना लिया है।

अधिक आयुके व्यक्तियोंका बालिकाओंसे विवाह करना असामान्य नहीं है। पिछले कुछ समयसे ऐसे विवाहकी बहुतसी घटनाओंकी सूचनाएं सामने आई हैं । कुछ समय पूर्व मदुरै स्थित कोट्टनथम्पट्टी गांवके ओथापट्टीमें ३१ वर्षके टी बालामुर्गनको बालिकासे विवाह करनेके आरोपमें पकडा गया था । ऐसी ही नवम्बरमें पेरुनगुडी स्थित कस्तूरीबाई

'कॉलोनी'के २९ वर्षीय ए सक्तिवेलको १६ वर्षकी बालिकासे विवाह करनेके आरोपमें पकडा गया था।

बाल विवाह रोकना तेलंगाना प्रशासनके लिए बडी चुनौती सिद्ध हुआ है। २०१९ के मिले आंकडोंके अनुसार नगरकी पुलिसने १४ माहमें ५१ ऐसे बच्चोंको पकडा था, जिनका विवाह हो गया था। इनमें अधिकतर विवाह मुसलमान समुदायसे थे।

ऐसी निकृष्ट मानसिकता संस्कारोंके अभावके कारणों अधिकांशत: धर्मान्धोंमें देखनेको मिलती है और इन्हें इस देशके विधानका भी भय नहीं होता है। जो बालिकाओंको वासनापूर्तिकी माध्यम मात्र समझते हैं, चाहे यह नैतिकताकी दृष्टिसे अमानवीय ही क्यों न हो ? ऐसे लोग इस धरापर अभिशापकी भांति हैं।

****

'यूएन'के ईसाई कर्मचारियोंको कांगोमें मुसलमान बना रहा पाकिस्तानी कर्नल, जांचके आदेश

कांगो डेमोक्रेटिक रिपब्लिकके मध्य अफ्रीकी राष्ट्रमें नियुक्त एक पाकिस्तानी सेना कर्नलको संयुक्त राष्ट्र मिशनके कर्मचारियोंको इस्लाम धर्ममें परिवर्तित करनेके प्रयास करते हुए पाया गया है। उल्लेखनीय है कि कांगोमें अधिकांश जनसङ्ख्या ईसाई धर्मके विभिन्न सम्प्रदायोंसे जुडी हुई है, वहीं इस्लाम अल्पसङ्ख्यक धर्ममें आता है।

'मीडिया रिपोर्ट्स'के अनुसार, कांगो डेमोक्रेटिक रिपब्लिकमें 'यूनाइटेड नेशन ऑर्गनाइजेशन स्टेबिलाइजेशन मिशन'के पाकिस्तानी दलके एक 'डिप्टी कमांडर' कर्नल साकिब मुश्ताकीपर स्थानीय कर्मचारियोंको इस्लाममें परिवर्तित

करानेके प्रयास करनेका आरोप लगा है । कथित रूपसे पाकिस्तानी सेनाके कर्मियोंने कुछ ईसाई संयुक्त राष्ट्र मिशनके कर्मचारियोंसे सम्पर्क करते हुए उन्हें इस्लाम अपनानेके लिए प्रेरित किया।

धर्मपरिवर्तनको लेकर लगे आरोपोंके पश्चात इस पाकिस्तानी 'कर्नल'के विरुद्ध जांचके आदेश दिए गए हैं । सामान्य मुख्यालयने (जीएचक्यू) घटनाके पीछेके सत्यका अभिज्ञान करनेके लिए एक आन्तरिक जांच आरम्भ की है।

यह प्रथम बार नहीं है, जब संयुक्त राष्ट्र अभियानोंके लिए पाकिस्तानी सेनापर अनुचित कार्य करनेका आरोप लगाया गया है। इससे पहले संयुक्त राष्ट्र मिशनका एक भाग रह चुके एक पाकिस्तानी सेनाके अधिकारीपर पहले भी नियम उल्लंघनका आरोप लगाया गया था।

जिहादी अशिक्षित हो या शिक्षा प्राप्त उच्च अधिकारी क्यों न हो, उसकी मानसिकता एवं विचारधारा जिहादी प्रवृति की ही होती है। क्या संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय इसकी जांच गम्भीरतासे करेगा; क्योंकि ईसाई मिशनरियोंने भी तो यही कृत्य किए हैं ! (०२.०१.२०२१)

****

असत्य समाचार देते हुए 'द वायर'ने घटनाको दर्शाया जातिगत हिंसा, वहीं आरोपी मुसलमान होनेपर छुपाया उनका धर्म और नाम

वामपन्थी विचारधारायुक्त समाचार वाहिनी 'द वायर' अपराधोंको जातिगत हिंसा दर्शाकर वैमनस्य फैलानेका प्रयास करता है; वहीं आरोपी यदि मुसलमान हो तो उसका नाम तथा धर्म छुपा लेता है।

१० दिसम्बरको प्रकाशित समाचारमें 'द वायर'ने प्रकाशित किया कि मध्य प्रदेशके छतरपुरमें २५ वर्षीय अनुसूचित जातिके युवककी मात्र इसलिए सवर्णोंने हत्या कर दी; क्योंकि उसने किसी समारोहमें उच्चजातिके लोगोंकी थालीको छू लिया था। मृतक किशनपुर गांव निवासी देवराज अनुरागी 'कोरी' समुदायका था। उसकी हत्या करनेवाले दो सवर्ण मित्र अपूर्व सोनी तथा संतोष पालने उसकी पीट-पीटकर हत्या कर दी। आरोपी घटनाके पश्चात पलायन कर गए हैं।

'द वायर'का यह समाचार असत्य है। वास्तविक घटनाके अनुसार महिलासे छेडछाडकी गई थी। मृतकके भाईने भी इस बातकी पुष्टि करते हुए कहा कि ७ दिसम्बरको उसका भाई सम्पूर्ण दिवस घरमें ही था, वह मानसिक रूपसे अस्थिर था। उसने यह भी बताया कि हत्यामें जातिगत कारण भी नहीं था । गांववालोंने बताया कि संतोष पालकी बहन मिष्टान्नकी आपणिपर गई थी, जहां देवराजने उससे छेडछाड की थी। इसपर क्रोधित भाईने मित्र भूरा सोनीके संग मिलकर देवराजकी पीट-पीटकर हत्या कर दी थी।

उल्लेखनीय है कि 'द वायर'ने इस अपराधको जातिगत दर्शाकर जनमानसमें वैमन्य और हिंसा भडकानेका दुष्कार्य किया है। इसके विपरीत 'द वायर' मुसलमानोंद्वारा की गई हत्याओंको धर्म तथा नाम छुपाकर प्रकाशित करता है। उत्तर प्रदेशमें अनुसूचित जातिके २५ वर्षीय युवक धर्मपाल दिवाकरने आत्महत्या की। उसे दो मुसलमान युवक नूर मोहम्मद और सलमानने आमके वृक्षकी पत्तियां तोडकर बकरीको खिलानेके कारण निर्दयतासे पीटा था। इससे व्यथित होकर उसने आत्महत्या कर ली थी। 'द वायर'ने यह समाचार

प्रकाशित करते समय मृतककी अनुसूचित जाति तो बताई थी; परन्तु आरोपियोंका धर्म तथा उनके नाम छुपा लिए थे ।

अनेक समाचार वाहिनियोंने इससे पूर्व भी ऐसे प्रयासकर स्वयंको धर्मनिरपेक्ष सिद्ध करनेके प्रयास किए हैं । इनकी धर्मनिरपेक्षताका अर्थ मुसलमानके अपराध छुपाना तथा सवर्ण हिन्दुओंको अपराधी सिद्ध करना होता है । यहांतक कि किसी मौलवीद्वारा किए बलात्कारका समाचार प्रकाशित करते समय अपराधी मौलवीके स्थानपर हिन्दू साधुके चित्र भी दर्शानेसे ये नहीं लजाते । हिन्दू समाजको एकत्रित होकर ऐसी समाचार वाहिनियोंका घोर विरोध तथा निषेध करना चाहिए । समयसे न जागे तो बहुसङ्ख्यक होते हुए भी हम प्रताडित होते रहेंगे । (०२.०१.२०२१)

****

विवाहमें सम्मिलित होने आई पाकिस्तानी 'बेगम'ने बनवाया छद्म मतपत्र, बन बैठी ग्राम प्रधान

पाकिस्तानी 'बानो बेगम'पर घुसपैठका प्रकरण प्रविष्ट किया गया है । बानो बेगम ३५ वर्ष पूर्व विवाहमें सम्मिलित होनेके लिए पाकिस्तानसे भारत आई थी । उत्तर प्रदेशके एटा क्षेत्रके गुदऊ गांवमें उसने 'अख्तर अली'से विवाह कर लिया था । 'बेगम'ने अपने प्रवेशपत्रकी अवधि भी कई बार बढवाई थी ।

गुदऊ गांव पंचायतकी ग्राम प्रधान 'शाहनाज बेगम'की मृत्यु हो जानेपर, 'बानो बेगम' वहांकी पंचायतकी प्रधान बन गई । गुदऊ गांवके ग्राम पंचायत सचिव ध्यान सिंहने, प्रधान पदके लिए बानोको मनोनीत करनेके लिए सुझाव दिया था ।

इससे पूर्व 'बेगम बानो' २०१५ में चुनावके लिए नामाङ्कित हुई थी और बहुमतसे विजयी भी हुई। इस प्रकार ऐटा स्थित गुदऊ गांवकी पंचायतकी सदस्य बन गई थी।

कुवैद खानने उसका पाकिस्तानी होना उजागर किया, जिससे पूरे गांवको झटका लगा। इसी कारणसे 'बेगम'ने त्यागपत्र दे दिया था। 'डीपीआरओ' आलोक प्रियदर्शीद्वारा ऐटा जनपदके न्यायाधीशको सूचित करनेपर, न्यायाधीश सुखपाल भारतीने 'बानो'पर प्रकरण प्रविष्टकर जांचके आदेश दे दिए हैं।

बनो बेगम तो मात्र एक उदाहरण है। देशद्रोही कांग्रेसके शासन कालमें ऐसे बहुतसे घुसपैठिए, भारतमें आकर बस गए और लौटकर कभी जानेका नाम भी नहीं लिया। ऐसे जिहादियोंको ढूंढकर पुनः इसी अवस्थामें ही पाकिस्तान पहुंचा देना चाहिए, यही उनके लिए दण्ड हो सकता है। साथ ही उनको बसानेवाले देशद्रोहियोंको भी पाकिस्तान भेज देना चाहिए। (०२.०१.२०२१)

****

साधारणसे उधारके विवादपर समुदाय विशेषके चालीस लोगोंने लगाए 'घर बिकाऊ है'के फलक

मेरठ जनपदके मवीमीरा गांवमें ४० घरोंपर बिकाऊके फलक (बैनर) चिपके हुए दिखाई दिए। यह विवाद केवल बीस रुपयोंके उधारको लेकर हुआ है। समुदाय विशेषके एक युवकने अपने घरके परिसरमें ही दैनिक खाद्य सामग्रीकी छोटीसी आपणि (दुकान) बना रखी है।

कुछ दिवस पूर्व सुन्दर नामक व्यक्तिद्वारा 'सिगरेट' उधार मांगनेपर, विक्रेताने मना कर दिया था। पासमें खडे अन्य

युवक तैयबने सुन्दरको उधार दिलवा दिया। कुछ दिनों पश्चात उधार नहीं लौटनेपर सुन्दर और तैयबके मध्य विवाद उत्पन्न हो गया। कुछ बढे-बूडे लोगोंने उनका 'समझौता' करवा दिया; किन्तु सुन्दरने अपने कुछ साथियोंके साथ तैयबके घरपर आक्रमण कर दिया। उसने तोडफोडके साथ-साथ तैयबके परिजनके साथ भी दुर्व्यवहार किया।

समुदाय विशेषके कुछ लोगोंने दुःखी होकर अपने निवासोंपर 'घर बिकाऊ है'के फलक (पोस्टर) चिपका दिए। फलक उतारनेके लिए समझाए जानेपर, उन्होंने पुलिससे आरोपीके विरुद्ध कार्यवाही करनेकी मांग की। परिवादकर्ताओंका कहना है, यद्यपि अपराधीका नाम पुलिसको बताया जा चुका है, तथापि पुलिसने अभीतक कोई कार्यवाही नहीं की है।

यद्यपि हम किसी प्रकारके कलह अथवा हिंसाका समर्थन नहीं करते; इस छोटेसे विवादपर फलक लगानेवाले मुसलमानोंको भगवानका धन्यवाद करना चाहिए कि हिन्दू काटता नहीं है; क्योंकि हिंसा उसका संस्कार नहीं है; अन्यथा ये मुसलमान उन प्रकरणोंपर दृष्टि डालें, जहां हिन्दुओंको पलायन करना पडा है; क्योंकि वहां हिन्दू महिलाओंका बलात्कार किया जाता है, युवतियोंसे जिहादकर उनका जीवन सुनियोजित ढंगसे नष्ट किया जाता है; किसीका भाई मारा जाता है, किसीका पुत्र; परन्तु यहां केवल बातको बिगाडने हेतु फलक लगाए गए हैं, जबकि ऐसे छोटे-छोटे झगडे तो देशमें आज प्रत्येक स्थानपर होते हैं। (०२.०१.२०२१)

****

जम्मू और कश्मीरमें ४० वर्षसे रह रहे पंजाबीकी आतङ्कियोंने गोली मारकर की हत्या, कुछ मास पूर्व ही मिला था स्थायी निवास प्रमाणपत्र

जम्मू-कश्मीरमें एक ७० वर्षीय पंजाबी स्वर्णकारकी (ज्वैलरकी) श्रीनगरके मध्य 'बाजार'में गोली मारकर हत्या कर दी गई। घटना श्रीनगरके सराई बाला क्षेत्रकी है। गुरुवार, ३१ दिसम्बर २०२० को दोपहिया वाहनपर आए आतङ्कवादियोंने स्वर्णकारपर गोली चलाई। मृतक पिछले चार दशकसे जम्मू-कश्मीरमें रह रहे थे। कुछ मास पूर्व ही उन्हें स्थायी निवास प्रमाण पत्र (डोमिसाइल) मिला था; इसलिए उन्होंने एक घर और 'दुकान' भी क्रय किए थे।

मूल रूपसे अमृतसरसे सम्बन्ध रखनेवाले सतपाल निश्छलकी हत्याका दायित्व पाकिस्तान समर्थित आतङ्की सङ्गठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट (TRF)'ने लिया है। इस घटनाको लेकर 'फेसबुक'पर 'पोस्ट' करते हुए 'TRF'ने कहा है, "डोमिसाइलसे जुडा नूतन विधान अस्वीकार्य है। मूल कश्मीरियोंके अतिरिक्त यहां सम्पत्ति बनानेवाले हर किसीके साथ 'अधिकार करनेवाले'की भांति व्यवहार किया जाएगा। अभी बहुत कुछ होना शेष है।"

इस आतङ्की सङ्गठनका नाम प्रथम बार मार्च २०२० में सामने आया था। यह स्वयंको 'यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ' जम्मू-कश्मीर कहता है, जो कि बादमें 'TRF' बना। ये प्रतिबन्धित आतङ्की सङ्गठनों 'जैश-ए-मोहम्मद', 'लश्कर-ए-तैय्यबा' और हिजबुल मुजाहिद्दीनसे भी जुडा हुआ है। 'डोमिसाइल'से जुडा नया विधान प्रभावी होनेके पश्चात निश्छल पहले ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें इस प्रकार लक्ष्य बनाया गया है। वह

श्रीनगर स्थित 'निश्छल ज्वैलर्स'के स्वामी भी थे। समाचारके अनुसार, उनके हृदयपर तीन गोलियां आतङ्कियोंने मारी थीं।

उनके एक पारिवारिक मित्रसे ज्ञात हुआ है कि सराई बाला क्षेत्रमें स्थित उनकी 'दुकान' उचित मूल्यपर आभूषणोंके विक्रयके कारणसे विख्यात थी। सतपाल निश्छलके दो पुत्र और एक पुत्री हैं। उनपर गोली चलानेवाले आतङ्कवादियोंने इस घटनाको क्रियान्वित करनेके पश्चात 'ग्रेनेड' भी फेंका था, जिसमें एक 'सीआरपीएफ सब इंस्पेक्टर' चोटिल हो गए। वे घटनाके समय दक्षिण कश्मीरके अनंतनाग जनपद स्थित संङ्गम क्षेत्रमें 'पेट्रोलिंग' कर रहे थे।

पाकिस्तानमें अनेक प्रतिबन्धित आतंङ्की सङ्गठन अभी भी व्याप्त हैं, जो अपना कार्य निर्विघ्न कर रहे हैं और पाकिस्तान उन्हें पोषित कर रहा है, जैसे अमेरिकी सेनाने ओसामा बिन लादेनको पाकिस्तानके भीतर घुसकर मृत्युदण्ड दिया था, ऐसा ही भारतद्वारा अब इस आतङ्की राष्ट्रको और इनके पोषित आतङ्कियोंको दण्ड देना आवश्यक हो गया है।

****

पूर्व सैन्य अधिकारीसे शिवसैनिकोंकी 'गुण्डई', मुम्बई पुलिसने नहीं की प्राथमिकी प्रविष्ट

सितम्बर २०२० में नौसेना अधिकारीपर शिव सेनाके 'गुण्डों'द्वारा किए गए आक्रमणका विवाद समाप्त नहीं हुआ था कि महाराष्ट्रमें ऐसा ही एक और प्रकरण सामने आया है। मुम्बईके वडाला क्षेत्रमें सेनाके पूर्व अधिकारीने इस प्रकरणमें परिवाद प्रविष्ट कराया है। परिवादमें सेनाके पूर्व अधिकारीका कहना है कि शिवसेना नेता उन्हें मारनेकी धमकी दे रहे हैं और

उनके साथ हिंसाका षड्यन्त्र कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने इस प्रकरणमें मुम्बई पुलिसके अधिकारियोंद्वारा अनदेखी करनेका आरोप लगाया है।

पूर्व सेनाधिकारी सुदीप आप्टेने बॉम्बे उच्च न्यायालयमें याचिका प्रविष्ट की है, जिसमें उनका कहना है कि मुम्बई पुलिसने शिवसेना पार्षद एमी घोलेपर प्राथमिकी प्रविष्ट करनेसे मना कर दिया था। इस प्रकरणसे निराश पूर्व सेनाधिकारीने एक समाचार 'पोर्टल'से वार्तालाप करते हुए बताया कि कैसे उन्हें बॉम्बे उच्च न्यायालयका द्वार खटखटानेके लिए विवश होना पडा। उन्हें ऐसा इसलिए करना पडा; क्योंकि मुम्बई पुलिस इस प्रकरणसे सम्बन्धित नेताओंके व्यवहारको लेकर असंवेदनशील और निष्क्रिय बनी हुई थी।

यह पहला ऐसा अवसर नहीं है शिवसेनाके 'गुण्डों'ने सत्ताकी अकड दिखाकर साधारण नागरिकोंके साथ इतना निकृष्ट व्यवहार किया हो। इससे पूर्व शिवसेनाके 'गुण्डों'ने नौसेनाके अधिकारीको उद्धव ठाकरे, शरद पवार और सोनिया गांधीपर बनाया गया व्यङ्ग्यात्मक 'कार्टून' साझा करनेके लिए बुरे ढंगसे पीटा था। इस प्रकरणके 'सीसीटीवी फुटेज' भी सामने आए थे, जिसमें शिवसेनाके 'गुण्डे' नौसेनाके अधिकारीको पीट रहे थे।

बाल ठाकरेकी हिन्दुत्वनिष्ठ शिवसेना अब कांग्रेसके संस्कारोंपर चल रही है। शीघ्र ही इनका अन्त अवश्य ही होगा!

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है। यह वर्ग प्रत्येक रविवार , त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523 , 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं। इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. शिष्यके गुण, ४ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र, ६ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. नामजप कब , कहां और कितना करें ? ८ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह

'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है । इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915